CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

परम शान्तिका स्रोत

WHERE GRACE ABIDES

●

आदि शंकराचार्य
और
पवित्र शृंगेरी

ADI SHANKARACHARYA AND
HOLY SRINGERI

●

शंकर विद्या केन्द्र, दिल्ली
SHANKARA VIDYA KENDRA, DELHI

मूल्य : ६० पैसे Price : 60 Paise

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात् परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।

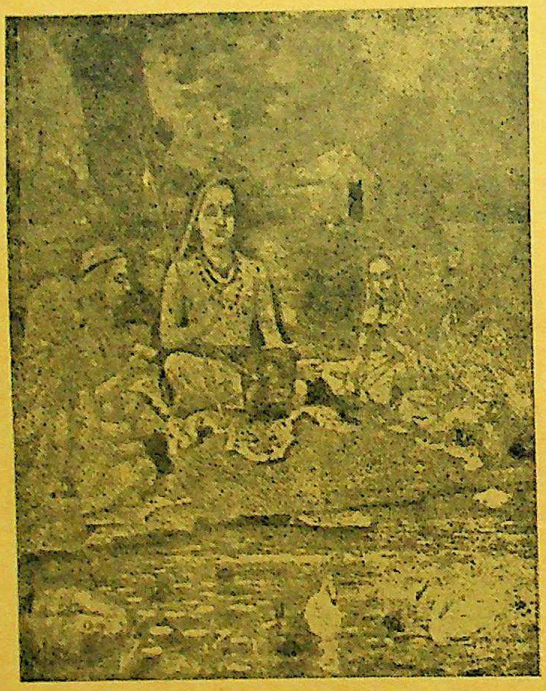

भगवत्पादाः श्री आदि शंकराचार्याः

BHAGAVATPADA SHRI ADI SHANKARACHARYA

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

परम-पवित्राः श्री अभिनव-

विद्यातीर्थ स्वामिनः—शृंगेरी-शारदा-पीठस्य

३५ तमा जगद्गुरु-श्री शंकराचार्याः

HIS HOLINESS SRI ABHINAVA

VIDYATHEERTHA MAHASWAMINAHA

THE 35th JAGADGURU OF SHARADA PEETHAM

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

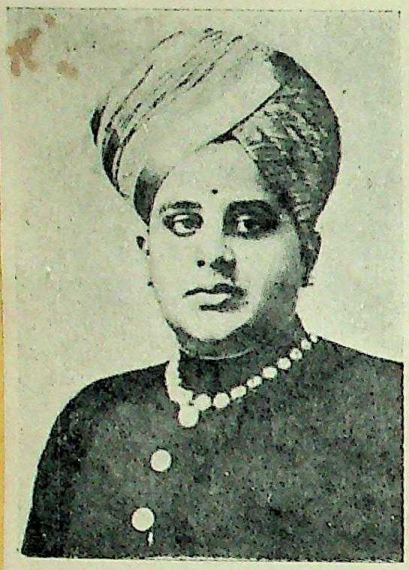

इस पुस्तकमें मैसूरके महाराजाधिराज श्री जयचामराज वाडियारके भाषणका अनुवाद है- जो उन्होंने २० नवम्बर १९६६ को शंकर विद्या केन्द्रके शंकर अद्वैता विद्या आश्रमके शिलान्यास पर दिया। यह शिलान्यास राष्ट्रपति डा० राधाकृष्णन् द्वारा श्रृंगेरीके परम पवित्र जगद्गुरु-शंकराचार्यकी उपस्थिति में किया गया।

This brochure carries a reprint of the address (and its Hindi version) on "Sringeri and Shankara" by His-Highness Shri Jayachamaraja Wadiar, Maharaja of Mysore, on the auspicious occasion of laying the foundation of Shankara Advaita Vidya Ashrama of Shankara Vidya Kendra by the President of India Dr. S. Radhakrishnan in the divine presence of His Holiness Jagad-guru Shankaracharya of Sringeri Mutt in New Delhi on 20th November, 1966.

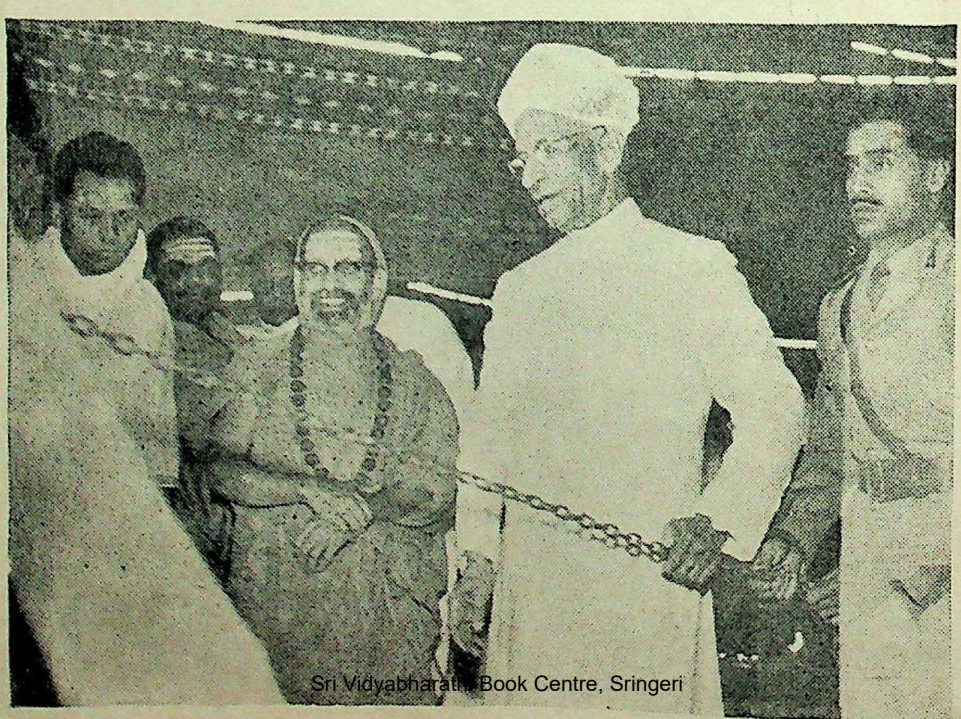

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शृंगेरी तीर्थस्थान है, और मैसूरराज्यमें पावन नदी तुंगाके तटपर स्थित है। चारों ओर घने जंगल तथा मनोहर पहाड़ियां हैं - जिससे यहांका वातावरण शान्त और मनोरम है। इर्द-गिर्दके लहलहाते खेतोंसे संतुष्टि तथा समृद्धि की भावना गहरी होती है। इस पवित्र स्थानको देखने केलिए आनेवाले व्यक्तिको बस्तीमें घुसनेसे पहले ही प्रकृतिकी विपुल उदारताका आनन्द प्राप्त हो जाता है।

"शृंगेरी" "ऋष्यशृंगकी पहाड़ी" "शृंग गिरि" का लघुरूप है। कहा जाता है कि ऋष्यशृंग ऋषि अपने पिता विभंडकके साथ वहां रहते थे। दोनों ऋषि अपनी कठोर तपस्या तथा कठिन साधनाकेलिए प्रसिद्ध थे। हमारे महाकाव्योंमें इस बातका उल्लेख है कि राजा रोमपादके देशमें बारह वर्षोंतक भयंकर सूखा पड़ा। तब ऋष्यशृंग ऋषिको राज्यमें आनेकेलिए निमंत्रित किया गया। उन्होंने आकर इस विपत्तिका परिहार किया। बादमें अयोध्याके राजा दशरथने पुत्रोत्पत्तिकेलिए आयोजित पुत्रकामेष्टि-यज्ञके संचालनहेतु इन्हीं ऋष्यशृंगऋषिको अपनी राजधानी-में बुलाया था। उस सफल यज्ञमें भाग लेनेकेबाद ऋष्यशृंगऋषि तुंगा नदीके क्षेत्रमें स्थित अपने मूल आश्रममें चले गये। कुछ समयके पश्चात् वह भगवान्‌के जिस प्रतीक श्रीलिंगकी पूजा करते थे, उससे एकाकार होगये।

यह स्वभाविक था कि धार्मिक शिक्षा तथा दीक्षाके हेतु पीठ स्थापित करनेकेलिए श्री शंकर भगवत्पादने दक्षिणमें ऐसे स्थानको चुना। अनुश्रुतिके अनुसार आचार्यने इस स्थानको इस कार्यकेलिए एक अन्य मनोरंजक कारणसे भी चुना। दक्षिणमें यात्रा करते हुए आचार्य अपने शिष्योंकेसाथ तुंगानदीके तटपर आये। यहां शान्त तथा मौन वातावरणमें वह अपनी प्रतिदिनकी भगवत्पूजा करने लगे। यह देख कर वे चकित रह गये कि उनके सामने एक सर्प अपना फण फैलाये सूर्यकी तपती धूपसे प्रसवपीड़ाग्रस्त मेंडकीकी रक्षा कर रहा है। आचार्य उस स्थानकी जहां जन्म-शत्रु भी शान्ति तथा सद्भावसे रहते थे, पावन प्रकृतिसे प्रभावित हुए। अतएव उन्होंने यह विशाल मठ स्थापित करनेके-

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

लिए इस स्थानको चुननेका निर्णय किया। यहां कुछ वर्ष उन्होंने साधना की और अद्वैत दर्शनके अपने सिद्धान्तोंका प्रचार किया। शृंगेरीमें आचार्य ने श्रीचक्र प्रतिष्ठापित किया जिसके ऊपर श्री शारदाकी सुन्दर मूर्ति विराजमान है। इस सम्माननीय शारदापीठ अर्थात् ज्ञानकेन्द्रमें उन्होंने अपने शिष्य सुरेश्वरको प्रथम आचार्य बनाया। यहीं इस उच्च ज्ञानपीठमें महान् मेधावी सुरेश्वराचार्य ने अपने प्रसिद्ध वार्तिकोंकी रचना की-जिनमें उन्होने अपने गुरु शंकर द्वारा सिखाये अद्वैतके वैदिक सिद्धांतोंको प्रभावकारी व्याख्या की।

सुरेश्वराचार्य के पश्चात् उद्भट विद्वत्ता तथा अनुपम पावनतावाली आचार्योंकी लम्बी शृंखलाने शृंगेरी मठका संचालन किया। इनमें विद्यातीर्थ, भारतीकृष्णतीर्थ, विद्यारण्य, सच्चिदानन्दभारती, श्रीनरसिंहभारती, श्रीसच्चिदानन्दशिवाभिनवनरसिंहभारती, और श्रीचन्द्रशेखर भारती विशेष प्रसिद्ध हैं। श्री विद्यातीर्थ श्री विद्यारण्यके शिक्षक भी थे। वह महायोगी तथा वेदोंके महाज्ञाता थे। लंबिकायोग नामक यौगिक क्रियासे उनका नाम संबद्ध है। श्री भारतीकृष्णतीर्थ दीर्घ काल तक शृंगेरी मठके अधिपति रहे। उनके भाई श्री विद्यारण्य उनके योग्य सहायक थे। श्री विद्यारण्यने श्रीशंकराचार्य-के कालसे स्थापित श्री शारदाकी लकड़ीकी बनी मूर्तिके स्थानपर धातुनिर्मित मूर्ति स्थापित की। उन्होंने कलात्मक विद्याशंकर मंदिर भी बनवाया। संस्कत वाङ्मयकी विविध शाखाओंमें श्री विद्यारण्य प्रवीण थे। वस्तुतः उन्होंने उस कालमें हिन्दू संस्कृतिकी रक्षा की। श्री सच्चिदानंद-भारती बहुत बड़े ईश्वर भक्त थे। इन्होंने शृंगेरीके मलहानिकरेश्वर मंदिरमें खम्बेपर श्री गणेशकी आकृति खचित की थी। श्री नृसिंहभारती दीर्घ कालतक शृंगेरी मठके अधिपति रहे। उन्होंने दूर-दूरतक यात्रा की और शृंगेरीमठकी सम्पत्ति तथा प्रतिष्ठाको काफी समृद्ध किया। कितनेही राजा महाराजा उनके उत्साही शिष्य बन गये। श्री सच्चिदानन्द शिवाभिनवनरसिंहभारती आदिशंकराचार्य के अवतार माने जाते थे। अपनी आठ वर्षकी अवस्थासेही वे सर्वोच्च परमसत्यका लगातार उच्चारण किया करते थे। श्रीचन्द्रशेखरभारतीने तो शृंगेरीके श्री शारदामंदिरको पूर्ण किया। वह अपने पूर्वगामीका जो उनके आध्यात्मिक गुरु भी थे बहुत आदर करते थे। वह संस्कृत के अद्वितीय विद्वान् थे।

मन्दिरोंकी बहुतायत होनेके कारण शृंगेरी पवित्र तथा मनोरंजक है। विद्याशंकर मन्दिरकी मीनार (बुर्ज) शानदार हैं। शारदामन्दिर

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

अत्यन्त आकर्षक हैं । पहाड़ीपर स्थित मलहानिकरेश्वरका मन्दिरभी ऐसाही है । भगवान जनार्दनका मन्दिर शृंगेरीमें सबसे पहले बना बताया जाता है। श्रीशृंगेरीमें तथा चारों ओर बने छोटे छोटे सुन्दर मन्दिर सदासे बहुतसे भक्तजनोंके आकर्षणस्थान रहे हैं । मन्दिरोंकी स्थापत्य तथा मूर्तिकलाभी उपेक्षणीय नहीं है। द्रविड़ तथा होयसलकी मिश्रित शैलीमें बना विद्याशंकरमन्दिर केवल देखनेमें ही भव्य नहीं लगता, बल्कि पुराणोंसे लिये गये दृश्योंको दिखातीहुई कलाकृतियां भी वहां देखनेको मिलती है । इतिहास, योग, ज्योतिष तथा पौराणिक कथाओं-पर आधारित हैं। जनार्दन मन्दिरमें गरुड़ तथा हनुमानकी मूर्तियां सुन्दर बनी हैं। सिंहगिरि अथवा पुरानी शृंगेरीमें चतुर्विंशेश्वर नामक मूर्ति है। विद्याशंकर ब्रह्मा विष्णु तथा ईश्वरका प्रतिनिधित्व करने वाले हैं। इसके चार मुख हैं।

शृंगेरीसे ६ मील दूर किग्गा नामक स्थान है। यहां एक मन्दिर है। इसके एक चौखटे (फलक) पर राजा रोमपादकी राजधानीको ले जाते हुए पालकीमें ऋष्यशृंग ऋषि दिखाये गये हैं। चौखट पर खचित कुछ हिरणोंका दृश्य बड़ा मनोहारी है।

शृंगेरी सदासे और आज भी संस्कृतविद्या तथा धार्मिक अध्ययनका प्रमुख केन्द्र है । प्राचीन भारतीय विद्याकी विभिन्न शाखाओं विशेषकर अद्वैतवेदान्तकी शिक्षा यहां दी जाती है। सद्विद्यासंजीवनी संस्कृतपाठशाला में भारतीय तर्कशास्त्र, व्याकरण, मीमांसा तथा अद्वैतवेदान्तमें बहुतसे विद्वानोंको प्रशिक्षित किया है। मठका पुस्तकालय संस्कृतपुस्तकों तथा पाण्डुलिपियोंसे समृद्ध है। शृंगेरीके मठाधीशोंने प्राचीन भारतीय वाङ्मयका अध्ययन करनेको उत्सुक विद्यार्थियोंकेलिए मुफ्त खाना तथा निवास और अन्य सुविधाये देनेका सदा ध्यान रखा है।

प्राचीन कालसेही हिन्दू तथा अहिन्दू दोनों ने शृंगेरीमठ पर श्रद्धा रखी है। हरिहर तथा बुक्कने शृंगेरी संस्थानको ज़मीन तथा धन दिया। ट्रावनकौर तथा मैसूर के महाराजा जगद्गुरुओं के आशीर्वाद के अभिलाषी रहे । हैदर अली तथा टीपूसुल्तान शृंगेरीके प्रति अपना आदरभाव प्रदर्शित करते रहे । ब्रिटिश कमिशनर शारदापीठके प्रति म्मसानकी भावना रखते थे।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पावन शृंगेरी तथा उसके अन्दर पवित्र शारदापीठसे श्रीशंकर-भगवत्पादके जो शिवके अवतार माने जाते हैं. व्यक्तित्वका चित्र मस्तिष्कमें उभर आता है। अतएव उनके जीवन तथा क्रियाकलापोंका जिक्र किये विना चाहे संक्षेपमें हो, शृंगेरीका वर्णन पूरा नहीं हो सकता। श्रीशंकर केरल राज्यके कालटी नामक गांवमें उत्पन्न हुए। धर्मशील तथा ईश्वर-भक्त आर्याम्बा और शिवगुरु उनके माता पिता थे। बहुत बचपनमें ही उनका उपनयन संस्कार होगया था और उन्होंने ज्ञान प्राप्त करनेमें तीव्रगतिसे प्रगति की। शीघ्र ही उन्होंने सन्यास ले लिया। उन्हें गौडपादके अच्छे शिष्य गोविन्द भगवत्पादसे शिक्षाग्रहण करनेका सौभाग्य मिला था। बाद में उन्होने समस्तभारतकी यात्राकी और विभिन्न तीर्थस्थानोंके दर्शन किये, जिनमें काशी तथा बदरी भी थे। अपनी यात्रामें उन्होंने पूर्वमीमांसाके प्रसिद्ध विद्वान कुमारिलभट्ट तथा उनके योग्य शिष्य मण्डनमिश्रको शास्त्रार्थमें हरा दिया और उनको अद्वैत का अनुगामी बना दिया। उनके कई शिष्य बन गये जिनमें श्री पद्मपाद श्री हस्तामलक और श्री तोटक प्रसिद्ध हैं। अपनी यात्राके बीच श्रीशंकरने सब विनाशकारी प्रथाओंका खण्डन किया और वैदिकधर्म तथा अद्वैत सिद्धान्तकी स्थापना की। अपने विचारोंका प्रचार करनेकेलिए उन्होंने दक्षिण में शृंगेरी मठ, पश्चिम में द्वारकामठ, उत्तरमें बदरी मठ, तथा पूर्वमें जगन्नाथमठकी स्थापना की और उन्हें अपने योग्य शिष्योंको सौंप दिये। अपनी ३२ वर्षकी अवस्थासे पहले ही वे यह सब कर चुके थे और भारतीय दर्शन तथा साहित्यको अपनी प्रचुर तथा अनुपम देन भी दे चुके थे।

श्री शंकर द्वारा रचित कुछ रचनाओंकी ओर संकेत करना उचित होगा। उन्होंने प्रस्थानत्रय अर्थात् ब्रह्मसूत्र उपनिषद तथा भगवद्गीतापर सविस्तार प्रामाणिक व्याख्याएं लिखीं। उन्होंने अपने उद्देश्योंका सार देनेकेलिए विवेकचूड़ामणि तथा उपदेशसाहस्रीकी रचना की। मन्त्र-शास्त्रके सिद्धान्तोंका प्रतिपादन करनेकेलिए उन्होंने प्रपंचसार निर्मित किया। स्तोत्र-साहित्यकोभी उनका योगदान विपुल तथा विशिष्ट है। इनमें गणेश स्तुतिकेलिए पंचरत्न और लक्ष्मीनृसिंह स्तोत्र-तथा भ्रमराम्बिका स्तोत्र हैं। स्तुतिसाहित्यके विकासमें उनकी बड़ी देन शिवानंदलहरी तथा सौंदर्य लहरी हैं। ये भक्तिरस तथा साहित्यक छटासे भरपूर हैं।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

श्रीशंकराचार्य अद्वैत दर्शनके महत्तम व्याख्याता थे। उन्होंने मात्र तर्क तथा पक्की दलीलोंके आधारपर यह सिद्ध किया कि ब्रह्म ही एक मात्र सत्य है। वह गुणातीत है। एक है, अखण्ड है। उन्होंने बताया कि अविद्या अथवा अज्ञानके कारण यह ब्रह्म हमें विश्व जैसा प्रतीत होता है। इसी अविद्या के कारण ब्रह्म और व्यक्तिमें भेद दिखाई देता है। जबकि वस्तुतः दोनों अभिन्न हैं। अतएव मानवको सद्विद्या प्राप्त करके अविद्याका निराकरण करनेका प्रयत्न करना चाहिए। शंकरके अनुसार वेदान्तके महावाक्योंके अध्ययन, समझने तथा मनन से यह विद्या प्राप्त हो सकती है। संसारको आचार्यके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए। क्योंकि उन्होंने यह सिखाया कि अविद्याके निराकरण तथा ब्रह्म और मानवात्माके तादात्म्य प्राप्त करने में मुक्ति है।

दीर्घकालसे मैसूरके राजवंश और शृंगेरीके आचार्योंके बीच सघन तथा स्नेहपूर्ण सम्बंध रहा है। मैसूरके क्रमागत महाराजाओंका यह सौभाग्य रहा है कि वे शृंगेरीके धर्म तथा विद्यापीठके शिष्य रहे। लगभग एक शताब्दी पूर्व महाराजा श्री मुम्मडी कृष्णराज वाडियार बहादुरने शृंगेरी मठके श्रीनरसिंहभारती स्वामीका भव्य स्वागत समारोह किया जिसमें उन्होंने उनको एक बहुमूल्य ताज भेंट में दिया। उन्होंने शृंगेरीके भगवान् चन्द्रमौलीश्वरको मकराभरण नामक एक बहुमूल्य आभूषण भी समर्पित किया। स्वामीजीसे जो अपनी आध्यात्मिक शक्तियोंके कारण उग्र स्वामी कहलाते थे, उन्हें शिवगीता पढ़नेका सौभाग्य मिला था। श्री नृसिंहभारती स्वामीके परामर्शसे मुम्मडी कृष्णराज वाडियारने मैसूरके राजविद्वान् कुणिगल रामशास्त्रीके पुत्र बालक शिवस्वामी-को चुना और उसको सन्यास दिलानेमें स्वामीजीकी सहायता की। यही बालक बादमें प्रसिद्ध श्री सच्चिदानन्दशिवाभिनवनरसिंहभारती बना। हालमें महाराजा नालवडी कृष्णराज वाडियार बहादुरने जो मठके बड़े उत्साही शिष्य थे, उस उत्सवमें भाग लिया जो शृंगेरीमें श्री शारदा मन्दिरके महाकुम्भाभिषेकके उपलक्ष्य में मनाया गया था। महाराजकी उदार उपस्थितिमें मैसूरमें अभिनवशंकरालयका उद्घाटन हुआ और श्री सच्चिदानन्दशिवाभिनवनरसिंहभारती स्वामीकी मूर्ति उसमें स्थापित हुई। अपने पूर्वजोंके चरण चिन्होंका अनुसरण करनेमें जो सब शृंगेरी मठके शिष्य थे, मुझे स्वयं महान् आनन्द प्राप्त हुआ है। मेरा यह भी सौभाग्य है कि वर्तमान स्वामी श्री अभिनवविद्यातीर्थस्वामीजी

Sri Vidyabhaskathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

मेरे आध्यात्मिक गुरु हैं और मैंने उनसे अनगिनत आशीर्वाद प्राप्त किये है।

शृंगेरीमें श्रीशंकरके उत्तराधिकारियोंने अद्वैतके योग्यतम व्याख्याताओं द्वारा सौंपी गई तत्वदर्शनकी मशालको निरन्तर प्रज्वलित रक्खा है। अब यह उत्तरदायित्व श्रृंगेरीके ज्ञानदर्शन तथा धर्मके उच्चपीठके वर्तमान अधिष्ठाता जगद्गुरु श्री अभिनवविद्यातीर्थ स्वामीजीके कंन्धों पर है। गुरुमहाराज उद्भट विद्वान तथा साधु पुरुष हैं। अद्वैत वेदान्तके प्रचारके अतिरिक्त ये संस्कृत विद्याके प्रसार मन्दिरोंके निर्माण तथा अभिषेक और जीवनके उच्चमूल्योंके अभिवर्धनमें संलग्न रहते हैं। निस्सन्देह इनका जीवन निर्वाणाष्टकके उस श्लोकके अनुरूप है- जिसमें लिखा है कि

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ
मदो नैव मे नैव मात्सर्य भावः।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्षः
चिदानन्दरूपः शिवोहं शिवोऽहम्॥

मुझमें द्वेष नहीं, राग नहीं। न मुझमें लोभ है- न मद है और न मुझमें मत्सरता है और न मुझे धर्म, अर्थ, काम, मोक्षकी इच्छा है, क्योंकि मैं चिदानन्द रूप शिव हूँ शिव हूँ।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Sringeri is a sacred place situated on the banks of the holy river Tunga in the State of Mysore. Thick woods and enchanting hills which surround the town lend to it a peaceful and lovely atmosphere. Well-cultivated fields around it create a sense of abundance and satisfaction; and a visitor to this place of sanctity enjoys the rich bounties of nature even when he is still at a distance from the town.

The word "Sringeri" is a shortened form of "Sringagiri", the hill of Rishyasringa, a sage who is said to have lived there with his father Vibhandaka. Both sages were famous for their intense penance and severe austerities. We learn from our epics that there was a severe drought in the country of King Romapada for a period of twelve years and that the disaster was put an end to by the sage Rishyasringa who was invited to visit the kingdom. And later, Dasaratha, King of Ayodhya requested the same sage to come to his capital city and to officiate as the chief priest in the '*putrakameshti*' sacrifice which he had decided to perform in order to beget offspring. After participating in the fruitful sacrifice, sage Rishyasringa is said to have returned to his original hermitage situated in the region of the river Tunga. And after sometime he attained oneness with the linga or the symbol of the supreme he was worshipping there.

It was but natural that Sri Shankarabhagavatpada should have selected such a place to found in the south a seat of religious learning and practice. Tradition gives an interesting account of yet another reason for which the Acharya chose the place for the purpose. Accompanied by his disciples, the Acharya during his travels in the South came to the banks of the river Tunga. There in the quiet and peaceful surroundings he was offering his daily prayers to God. To his great surprise, he saw in front a serpent spreading its hood to ward off the intense heat of the Sun from a

Sri Vidyabhagath Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

frog that was in the pains of confinement. The Acharya was struck with the sacred nature of the place where even natural enemies were living in peace and harmony and he decided to select it for the founding of a great "*Matha*" or religious centre. He stayed there a few years in contemplation and spread the tenets of his philosophy of non-dualism-Advaita. The Acharya installed a "*Srichakra*" at Sringeri upon which is superposed the beautiful idol of Sri Sharada. And in this venerable '*Sharadapitha*' or centre of learning, he established his disciple Suresvara as the first preceptor. And here, in this high seat of learning, the intellectual giant Suresvaracharya wrote his famous *Vartikas* explaining convincingly the new doctrines of non-dualism taught to him by his revered master Shankara.

After Suresvaracharya, the Math at Sringeri was presided over by a long line of religious Heads of sound scholarship and un-equalled piety. Notable among these were Vidyatirtha, Bharatikrishnatirtha, Vidyaranya, Sri Sachidananda Bharati, Sri Nrusimha Bharati, Sri Sachidananda Sivabhinava Nrusimha Bharati and Sri Chandrasekhara Bharati. Of these Sri Vidyatirtha was the teacher of Sri Vidyaranya. He was a great yogin and a profound vedic scholar. His name is associated with the practice of the yogic posture - 'Lambikayoga'. Sri Bharatikrishnatirtha was the head of the Sringeri math for a long time and was ably assisted by his brother Sri Vidyaranya. And the latter established the metal image of Sri Sarada in place of the wooden one which existed from the time of Sri Shankaracharya. He also built the artistic Vidyashankara shrine. Sri Vidyaranya had mastered many branches of Sanskrit learning and was indeed the saviour of Hindu society at that time. Sri Sachhidananda Bharati Swamigalu was a great devotee of God and he sketched an outline of Sri Ganesa on the pillar in Malahanikaresvara temple at Sringeri. Sri Nrusimhabharati occupied the Sringeri seat for a long time, travelled widely and raised the wealth and prestige of the Sringeri matha. Many Maharajas became his ardent disciples. Sri Sachidananda Sivabhinava Nrusimha Bharati Swamigalu was thought to be an incarnation of Adi Shankaracharya. Even when he was a young lad of eight years, he constantly muttered the

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

great truth: "Sarvoham". And as for Sri Chandrasekharabharati Swamigalu, he gave the finishing touches to the temple of Sri Sharada at Sringeri and deeply respected his predecessor who was his spritual teacher. He was an unrivalled scholar in Sanskrit.

The presence of a large number of temples lends charm and colour to Sringeri. There is the Vidyashankara temple with its imposing tower. The holy shrine of Sharada is very attractive; and so is the temple of Malahanikareswara situated on a hillock. The shrine dedicated to God Janardana is supposed to be the earliest built in Sringeri and the little but pretty shrines in and around the place have attracted always large numbers of devoted men. Nor is the architectural and sculptural beauty of the shrines negligible. The Vidyashankara temple built in the combined Dravidian and Hoysala style is not only grand to look at but also presents to the student of art beautiful sculptures depicting scenes from the *Puranas*, Itihasas, Yoga, Astronomy and legandary lore. The idols of Garuda and Hanuman in the Janardana temple are attractively done. There is an image called *Chaturmurti Vidyesvara* at Simhagiri, or 'Old Sringeri' which has four faces representing Vidyashankara, Brahma, Vishnu and Isvara. Again, about six miles from Sringeri, there is a place called *Kigga* where there is a temple in which a panel depicts sage Rishyasringa borne in a palanquin to the capital of King Romapada. Some of the deer carved in the panel are delightful to look at.

Sringeri has always been, and is also at present, a great centre of Sanskrit learning and religious studies. Here is imparted knowledge in many branches of ancient Indian learning, particularly in Advaita Vedanta. The *Sadvidyasanjivini* Samskrita Pathasala has trained a number of scholars in Indian Logic, Grammar, Mimamsa and Advaita Vedanta. The library of the Math is rich in sanskrit books and manuscripts and the Heads of the Sringeri math have always taken care to provide facilities, free food and lodging to students eager to learn ancient Indian lore.

The Sringeri math has commanded respect both from Hindus and non-Hindus from early times. Harihara and Bukka donated money and lands to the Sringeri Samsthana, the kings of

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Mysore and Travancore sought blesssing from the *Jagadgurus*. Hyder Ali and Tippu Sultan offered their regards to the pontiffs of Sringeri and the British Commissioners were respectful to the Sharada pitha.

Sacred Sringeri and the holy Sharadapitha in it call up to one's mind the personality of Sri Shankarabhagavatpada who is held to be an incarnation of Siva;[1] and no account of Sringeri can be complete without recounting, though in a brief manner, his life and activities. Sri Shankara was born at Kaladi in Kerala and his parents were the devoted and pious Shivaguru and Aryamba. The young boy's upanayanam was celebrated in his early boyhood and he made rapid progress in the acquisition of knowledge. He took up sanyasa very soon and had the good fortune of being taught by Govindabhagavatpada, a good disciple of Gaudapada. Later he undertook an extensive tour of Bharata and visited many holy places including Kasi and Badri. During his tour he met Kumarilabhatta, the reputed scholar in Purvamimamsa and his able disciple Mandanamisra. Sri Shankara held a discussion with the latter, won the debate and converted his opponent to the system of Advaita. He acquired many disciples among whom the notable ones were Sri Padmapada[2], Sri Hastamalaka[3] and Sri Totaka, And during his tour, Sri Shankara denounced all unwholesome practices and established *vedic* religion and his metaphysics of monism. In order to propagate his views he established the *Sringeri Matha* in the South, the *Dvaraka Matha* in the West, the *Badari Matha* in the North and the *Jagannatha Matha* in the East and entrusted them to the hands of able disciples. All this he did before he reached his thirty second year by which time he had also made abundant and outstanding contributions to Indian philosophic and literary thought.

It is worthwhile to take note here of some of the works of Sri Shankara. He wrote elaborate and authoritative commentaries on the *Prasthanatraya*, viz., the *Brahmasutras*, the *Upanisads* and the

1. Samkarah Samkarah Prokto Govindo Badarayanah.
2. Who wrote the celebrated Panchapadika.
3. Who wrote the Hastamalaka stotra.

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Bhagavadgita. He wrote the *Vivekachudamani* and the *Upadesasahasri* to give an essence of his teaching; and he wrote the Prapanchasara to expound the principles of mantrasastra. His contribution to the stotra literature was enormous and significant and among these may be mentioned the *Pancharatna* in praise of Ganesa, the *Lakhminrusimha stotra* and the *Bhramarambika stotra*. His *Anandalahari* and *Soundaryalahari* are major contributions to the development of hymnal literature and these are rich in devotional fervour and literary excellences.

Sri Shankaracharya was the greatest exponent of the philosophy of Advaita or non-dualism. He pointed out on the basis of rigid logic and sound reason that Brahman is the sole Reality, that it is bereft of any qualities and that It is one and indivisible. He explained that this Supreme appears as the universe to us because of Avidya or Ignorance. It is this Avidya again that establishes a difference between the Supreme and the individual while in reality the two are identical. Man's efforts, therefore, must be directed towards the removal of ignorance by the acquisition of true knowledge. And such knowledge according to Shankara could be had by the study, understanding and reflection of the great statements or *Mahavakyas* of the Vedanta. The world should be grateful to the eminent Acharya who taught that liberation consisted in the removal of ignorance and the realisation of the identity between the individual Self and the great Supreme.

There has been from a long time close and cordial relationship between the Royal dynasty of Mysore and Swamins of Sringeri. Successive Kings of Mysore were privileged to be the disciples of the Sringeri seat of religion and learning. Nearly a century ago His Highness Sri Mummadi Krishanaraja Wadeyar Bahadur accorded a grand reception to Sri Nrusimha Bharati Swamy of Sringeri Math and presented to him a valuable crown. He also dedicated a precious ornament (Nagabharana) to God Chandramoulisvara of Sringeri. He had the good fortune of learning *Shivagita* at the hands of the Swamin who on account of his spiritual powers was known as 'Ugraswami'. On the advice of Sri Nrusimha Bharati Swamin, Mummadi Krishanaraja Wadeyar chose young Sivaswamy, son of Kunigal Rama Sastry - a court poet of Mysore and helped the

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

Swamin to initiate the boy into Sanyasa. It was this boy who later became famous as Sri Sachidananda Sivabhinava Nrusimha Bharati of Sringeri. Recently, His Highness Nalwadi Krishnaraja Wadeyar Bahadur who was an equally ardent disciple of the math, was graciously present when Sri Chandrasekhara Bharati Swamin celebrated the Mahakumbhabhisheka of Sri Sharadamandira at Sringeri. Under the benign presence of His Highness, the "Abhinavashankaralaya" was declared open at Mysore and the image of Sri Sachidananda Sivabhinava Nrusimha Bharati Swamin was installed in it. And, I myself have derived great pleasure in following the footsteps of my forefathers who were all disciples of the Sringeri math. Also, it has been my good fortune to have the present Swamin, Sri Abhinava Vidyatirtha Swamigalu, as my spiritual *Guru* and to have received numerous blessings from him.

The successors of Sri Shankara at Sringeri held aloft the torch of philosophic truth handed over to them by the ablest exponent of Advaita. And the responsibility of doing so has now fallen on the able shoulders of Jagadguru Sri Abhinavavidyatirtha Swamigalu, the present head of the high seat of learning, philosophy and religion at Sringeri. His Holiness is an eminent scholar and a man of piety. Apart from the propagation of Advaita Vedanta, His Holiness is always devoted to the propogation of Sanskrit learning, building and consecration of temples and promotion of higher values of life. Indeed his life illustrates a stanza of the Nirvanasataka which declares: "Hate and attachment are absent in me, greed and ignorance are at a distance and pride and jealousy keep away; I am not bothered by thoughts of merit, wealth. desire and release, for I am the great Absolute, the essence of which is consciousness".

Na me dvesharagau, na me lobha mohau
Mado naiva,me naiva matsaryabhavah,
Na dharmo na cartho na kamo na mokshah
Cidanandarupa Sivo ham Sivo ham".

(*Nirvanasataka*, 3.)

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

YOU CAN REACH SRINGERI

From **Bangalore** side by Road or Rail upto Kadur, and then by Road via Chikmagalur or Tarikere.

From **Bangalore** side by Road or Rail upto Shimoga and then by Road to Sringeri via Thirthahalli.

From **Bangalore** side or **Mysore** side by Road or Rail to Hasan or Arsikere and then by Road to Sringeri via Chikmagalur.

From **Bombay** side by Road or Rail upto Harihar and then by Road via Shimoga to Sringeri.

From **Mangalore** side by Road via Agumbeghat to Sringeri.

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

शृंगेरी पहुंचनेका मार्ग

बगलौरकी ओरसे सड़क अथवा रेल गाड़ी द्वारा कडूर तक और फिर सड़क द्वारा चिकमगलूर या तरीकेरे होकर

बैंगलौरकी ओरसे सड़क अथवा रेलगाड़ीद्वारा शिमोगातक और फिर सड़क द्वारा तीर्थहल्ली होकर शृंगेरी

बैंगलौर मैसूरकी ओरसे सड़क अथवा रेलगाड़ीद्वारा हासन अथवा अरसीकेरेतक और फिर सड़क द्वारा चिकमगलूर होकर शृंगेरी

बम्बईकी ओरसे सड़क अथवा रेलगाड़ीद्वारा हरिहरतक और फिर सड़क द्वारा शिमोगा होकर शृंगेरी

मंगलूरकी ओरसे सड़क द्वारा अगुम्बेघाट होकर शृंगेरी।

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

पवित्र शृंगेरीका मार्ग

शृंगेरी मठ एक सुरभ्य पवित्र स्थान है जो तुङ्गा नदीके किनारे पश्चिमी घाटमें मैसूर राज्यके चिकमागलूर जिलेमें अवस्थित है। शृंगेरी देशके लगभग किसी भी भागसे नीचे लिखे मार्गोंसे जाया जा सकता हैं :

- **बैंगलौर** — बायु, रेल, अथवा राज मार्गसे सम्बन्धित हैं।
- **हरिहर** — रेल अथवा राज मार्गसे सम्बन्धित-बम्बईके रास्ते - पूनासे बैंगलौर
- **मंगलूर** — बायु, रेल, राज मार्ग अथवा समुद्री मार्गसे सम्बन्धित है।

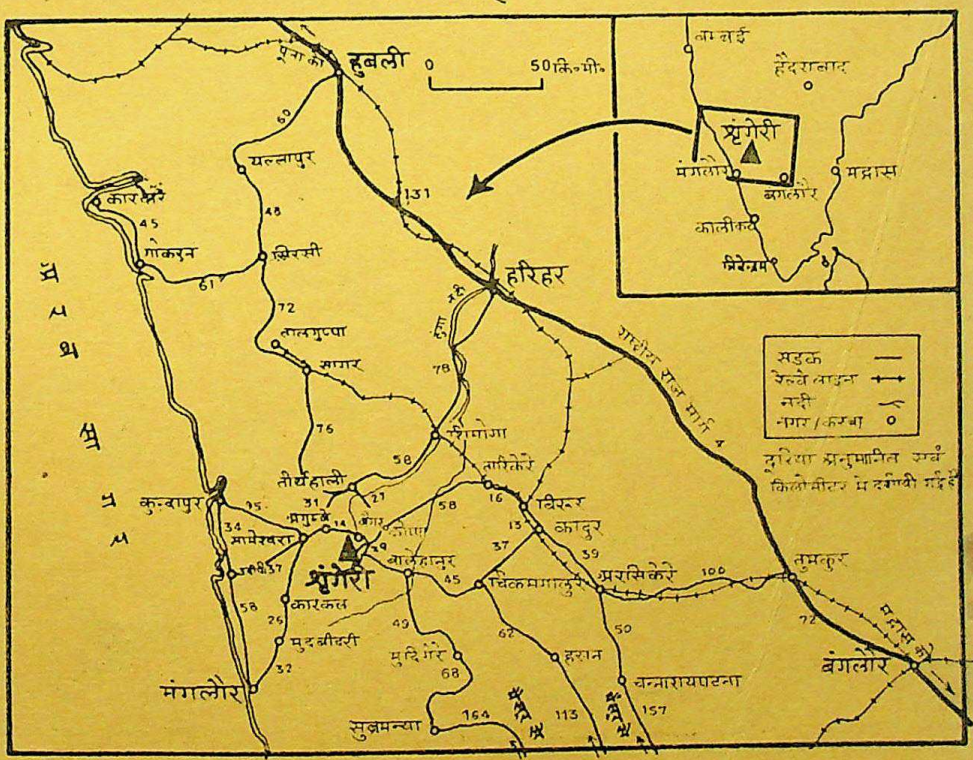

सुधा प्रिंटिंग प्रैस, देहली Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri

THE WAY TO HOLY SRINGERI

CC-O. In Public Domain. Digitized by eGangotri

SRINGERI is a serene and picturesque pilgrimage centre on the banks of the river Tunga—situated in the western ghats—located in Chikmagalur District of Mysore State. Sringeri is easily accessible from almost any part of the country through :

- **BANGALORE** — Connected by Air, Rail and Road
- **HARIHAR** — Connected by Rail and Road - on route from Bombay — Poona to Bangalore
- **MANGALORE** — Connected by Air, Rail, Road and Sea

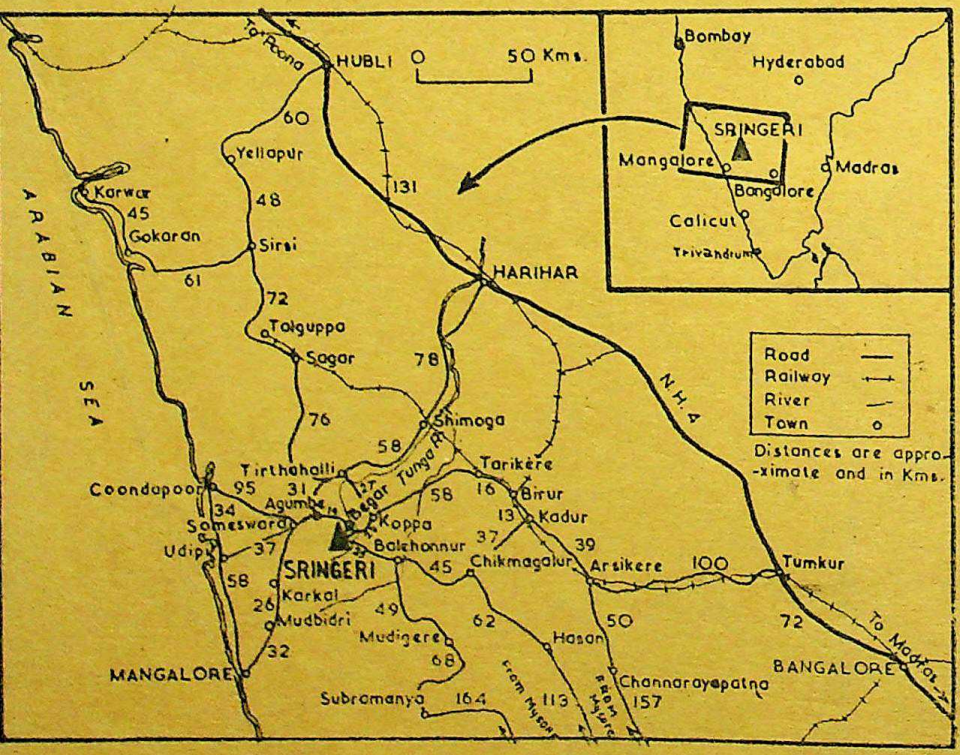

Sri Vidyabharathi Book Centre, Sringeri